REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

हिंदी एवं मराठी बाल कहानी-साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता

डॉ. अमोल विठ्ठल पालकर
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
बलभीम महाविद्यालय, बीड

प्रस्तावना :

हिंदी में मौलिक बालसाहित्य लेखन की शुरूआत वास्तव में बीसवी शताब्दी के आरंभ में हुई। सन् 1914 में विद्यार्थी, 1915 में शिशु और 1917 में बालसखा साहित्य पत्रिकाएँ आरंभ हुई। इनमें मैथिलीशरण गुप्त, कामता प्रसाद गुरू, डॉ. महेंद्र गर्ग, चंद्रमौलि शुक्ल आदि प्रमुख एवं श्रेष्ठ रचनाकारों ने रचनाएँ लिखी है। वैसे देखा जाए तो मौलिक बाल साहित्य अंग्रेजी बालसाहित्य के प्रभाव स्वरूप ही हिंदी में आया है। उसके पूर्व अनूदित बाल साहित्य हिंदी में आ चुका था।

आजादी के बाद बालसाहित्य में परिवर्तन आ रहा है। बच्चों का बचपन भी इससे प्रभावित हो चुका है। समाज, परिवेश और समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर वे विकसित हो रहे हैं। इसलिए बालसाहित्य रचनाकार को इन सब का ध्यान रखकर साहित्य निर्मिति करना आवश्यक है। बदलते युग की मानसिकता को लेखक ने ध्यान में रखना आवश्यक है। इसके विपरित अगर लेखन हुआ तो बालकों के लिए उसका उपयोग नहीं होगा। साथ ही बालक भी उसका स्वीकार नहीं करेंगे।

बाल कहानी-साहित्य में बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता निर्माण कर पर्यावरण संरक्षण करने के लिए प्रेरणापरक कई कहानियों का सृजन किया गया है जो न सिर्फ बच्चों के लिए बल्कि प्रकृति के स्वास्थपूर्ण एवं उज्वल भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण है। हिंदी बाल कहानी-साहित्य में डॉ. उषा पुरी की 'तुलसी चौरा' कहानी में तुलसी के गुण तथा पर्यावरण संतुलन के लिए उसका महत्व किस प्रकार है इस बात को पाठकों के सामने लाया गया है। कहानी की ग्राम सेविका पर्यावरण की दृष्टि से तुलसी का महत्व स्पष्ट करते हुए लोगों से कहती है- ''तुलसी वायु और जल दोनों को साफ करती है। तुलसी में एक उड़नशील तेल होता है जो हवा में मिलकर ज्वर उत्पन्न करनेवाले मलेरिया के कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। तुलसी की सुगन्ध से वायु में दूर-दर तक मौजूद हानिकारक जन्तु नष्ट हो जाते हैं। घर के आंगन में तुलसी का पौधा भी इसलिए लगाते हैं। इससे घर में साफ हवा प्रवेश करती है। पानी में तुलसी के पत्ते डाल कर पिया जाता है। पत्ते डाल देने से पानी कई दिन तक खराब नहीं होता। वही पानी रोगी को भी पिलाया जा सकता है। है न पानी को शुध्द करने का अद्भूत तरीका।''[1] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में तुलसी का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्व स्पष्ट किया है।

पंकज चतुर्वेदी की 'बेर का पेड़' कहानी में पेडों के उपयोग तथा महत्व बताया है जिससे पेड़ लगाने की प्रेरणा मिलती है जो पर्यावरण दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रकृति का संतुलन पेड़ों से ही तो होता है अगर पेड़ ही नहीं रहेंगे तो पर्यावरण संतुलित नहीं रहेगा। इसी प्रकार शिवनारायण सिंह की 'उपयोगिता अपनी-अपनी' कहानी में बबूल के पेड़ का महत्व स्पष्ट किया है। आम का पेड़ क्षमा माँगते हुए बबूल के पेड़ से कहता है- ''मित्र गर्ववश मैंने तुम्हारा अपमान किया था। पर आज मेरा सिर शर्म से झुक गया है। कँटीले होते हुए भी तुम इतने उपयोगी हो सकते हो, यह मैंने न जाना था। मैं तो किसी के दाँतों को दर्द दे सकता हूँ। मगर दर्द की दवा तो तुम्हारे ही पास है। अब से मैं कभी तुम्हारे मन को चोट पहुँचाने वाली बात न कहूँगा।''[2] इस प्रकार यहाँ पर बबूल के पेड़ का महत्व बताया है गया है जिससे पेड़ो का संरक्षण करने की सीख मिलती है। पेड़ बचेंगे तो निश्चित ही पर्यावरण संरक्षण तथा संतुलन रहेगा।